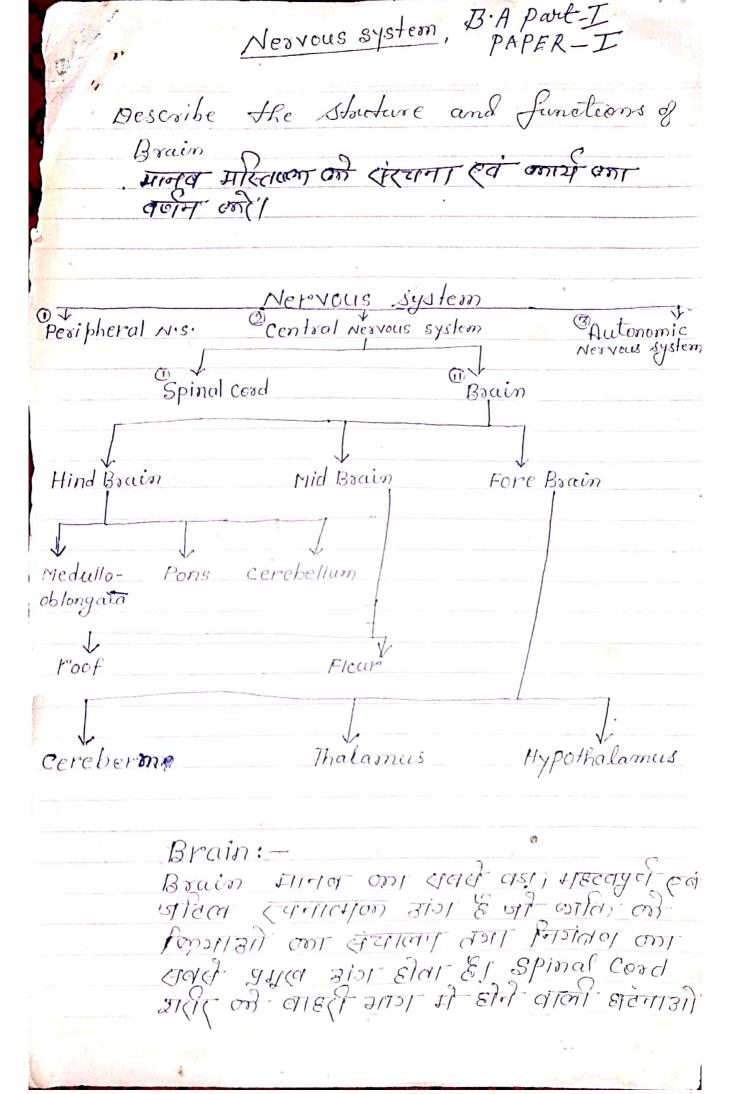
Psychology (Hons., Part 1 Paper 1st



on information brain ont dat El 31/2 brain st information and onist if परिवात कारी की जिल्ह मांश पेशिशों । भेजता है। जिलमी भी जीटल विक्राशि of cost brain fire et circular etal अर्गेट कार्य संचालन की देशिटकारेन brain ont दी मागी में वादा गमा ह D दाई अद्देशण्ड Right Hewisphere (D) लाई अद्देशण्ड Left Hewisphere Right Hewisphere 27(17 करें) वाभी भाग करें संगी मे जिल्लासों का संयालन काता हैoration lest Hewisphex articon right and की अंगी कार्र जिल्लाओं का संचालन काता है। 31ताः कार्य संचालन की दीवत दी अवरंग कार्र दी गागों में वॉवा गागां है तमा बनावत एवं जिल्लामां कार्र स्मानीयकाला की द्वित से बिहानों में अवरंग कार्र तीन मागी में बॉटा है। 1 Hind Brain 1 Mid Brain 1 Fore Brain 7110 1) Hind Brain: - Hind Brain ont 21 तीन भागी में पींटा गया ह @ medula-Oblongala B pons @ Cerebelum. Medula oblangala: - ITE con seg-(हता है तारा लाला सम्हों का वना होता El Spinal Cord ont brain of higher Centrus of Stimen off offar charles

Psychology Hons.

Part 1
Paper 2nd

Abmormal brychology PsychoPathology and paper (Hons:) PAPER-II (1 Cive the Historical Introduction of sludy of Abnormal behaviour and psychofalhology. Describe the Historical approaches of Abnormal psychology. शलमान्य मनोविज्ञान को हैतिहालिक निकास का संविध विवला प्रस्तुत कारें। शासमान्य कापहा की शहरागन प्रमा मानोक्साहिका का है तिहाित्क परियम् प्रस्तुत कारे। अलमान्य मनोविज्ञाम एका साहानिका मनोविज्ञान ह परित गृह गरि (नत्म है निका अस्प्रेमका अस्य के असी स्र भागव लग्नाता करे त्रारीम्मका मेग में गी मागरिका रोजी होते भे- अमेर अनकार अपनार भी विक्रभाषाता था, मार्ले ही अपयार का तरीका मातगानी माइ-पूंका. तन्त्र - मेल द्वाए होता भा। नेजानिक द्वित्वकोण का। विकाल हीते हों इस दोन में हान्हानिश्वास समाप्त ही जामाः तंभा अल्मान्य जावहार कारी मानिश्वा रीजाहै. मानकार उतका। उतहार रिकाम याने व्याम अस्मिराको क्रावहार क्ये अहत्वान क्या भना क्याहिष्णा को दीत्रशासिक खिलास का क्रीमका विवर् निममीलार्वत ह () त्राद्धान काल में अस्तिमान्ये क्षेत्रार्?:-प्राची न काल मा सम्मता की प्रारम्भिका काल में क्यांक अलमान्भ व्यवहार् को प्रति चित्तित थे उदा समभ अस्मान्य व्यवहार क्य विवान में दी वियारकाराह विव्यक्ष धुडिजीका उन्हा विभवास (वर्ष प्रतिवद्या तमा (व प्रार्थिभका द्रिशक्तिकी विद्यार होता है।

क्रिम्हानिश्वास एवं प्रेतीवद्या एवं विद्यार्टिशराः - प्राथिन काल में काित के ससमान्य कावहार करी देवी प्रकाल में काित को ससमान्य कावहार करी विश्वास श्रा कि जिस्काल में साम्रह प्रेत सात्मा का वास ही जाता श्रा कि विद्यास हो हो। त्यों र सह का को कि हािनिका का स्था कि स्थानिक की सामा जाता था। तथा कह काि माना जाता था। तथा कह काि माना जाता था। उसे सहा का पाता सम्भा काित को सम्भा जाता था। उस कािल में साम्रह प्रेत साम्रा वाले काित को स्थार की लिए हेि जिने पहीत को अपनाभा जाता था। करित के स्थार की लिए हेि जिने पहीत को साम्रा जाता था। करित काित को स्थान की किए स्थान की स्थार की स्थान की स्थान की स्थान की साम्रा जाता था। की स

- होद िकाभा जाता गा। समान्यतः होते मे

वह कार्य में निया गा। इसकी अपिरिक्य - वेशह देशा.

में अलगान्य कार्य को उपशा करेकि पुजारियों हत

सम्माधकारीमा भारा रिकार जाता मा

की अधीन कालीन चिक्रत्सी विचारमार :
प्राणीनकाल में अहाँ एक और अण्डानिश्वास का बोलवाला

या तो द्रवर्ष और सुनान तथा रोम में अख्यमान कावहार

या तो द्रवर्ष और सुनान तथा रोम में अख्यमान कावहार
को उपथार को खिल चिक्रत्सी पहीत को अपनाथा गर्भा

हिप्पोक्नेविज, शिक्नदर, रत्नेवी, आरस्त आहे विहानो ने

हिप्पोक्नेविज, शिक्नदर, रत्नेवी, आरस्त आहे विहानो ने

अख्यानान कावहार को मानासिक रोग म्यनकर को मनो

सिक्रा रोग माना और इक्को अपयार को लिए सहानुभीने

के अस्मान्य कावहार को मानासिक रोग म्यनकर को मनो

मानिश, जल अपहार को विवास की अपनार को लिए

मानिश, जल अपहार अधार नियंत्र हो जाना अपनार को लिए

मानिश, जल अपहार अधार नियंत्र हो जाना अपनार को लिए

मानिश, जल अपहार अधार नियंत्र हो जाना अपना अपना अधार को अधिक अधार का अधार को अधार का अधार को अधार का अधार को अधार को अधार को अधार का अधार को अधार को अधार का अधार का अधार का अधार को अधार को अधार को अधार का अधार का अधार का अधार का अधार को अधार का अधार को अधार को अधार का अधार को अधार का अधार का अधार को अधार का अधार के अधार का अधार